Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 3, April-2022, ISSN 2230-7540

उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

Maya Devi[1]*, Dr. Savita Gupta[2]

[1] Research Scholar, Lords University, Alwar (Raj)

[2] Research Supervisor, Lords University, Alwar (Raj)

सार - *शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का महत्वपूर्ण साधन है पर मानव जीवन तब श्रेष्ठ बनेगा जब मनुष्य मानसिक रूप से स्वस्थ होगा। मनुष्य को वातावरण का ध्यान रखना चाहिये। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में शिक्षा, शिक्षण, विद्यालय के वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि विद्यालय वातावरण सही होगा तो शिक्षक, विद्यार्थी, आस-पडौस के लोग स्वस्थ एवं शिक्षित होगें। फ्राबेल, वाटसन, व्यूमैन आदि वैज्ञानिकों ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व विद्यालय वातावरण को महत्वपूर्ण माना है। विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ आती है, जो विद्यार्थीयों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे- विद्यालय भवन, मैदान, शिक्षक, छात्र-छात्राऐं, साफ-सफाई, पुस्तकालय, शौचालय, पानी पीने की सुविधा आदि।*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में विद्यालयों के वातावरण को सृजित करने का निर्णय लिया गया मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने के लिए हमको ''स्वच्छ भारत अभियान'' को अपनायाहोगा। शिक्षा के इतिहास में एक समय था जबकि बच्चे की बुद्धि, रूचि, और विद्यालय केवातावरण, मानसिक स्वास्थ्य आदि स्थितियों की ओर ध्यान नही दिया जाता था अब शिक्षा काकेन्द्र बालक बन गया है। उसके मानसिक व विद्यालय के वातावरण व पाठयक्रम का निर्माण किया गया है।

प्रत्येक अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिये। जिससे विद्यार्थियों को विद्यालय में अनेक प्रकार की सुविधा व वातावरण सम्बन्धी किसी भी प्रकार की परेशानी नही होनी चाहियें अगर विद्यालय का वातावरण दूषित हुआ तो विद्यार्थीयों को अनेक प्रकार की बीमारियाँ व मानसिक सम्बन्धी परेशानियों का सामना करना पड सकता है। ओटावें ने विद्यालय के वातावरण को सामाजिक अधिकार माना है। विद्यार्थीयों के मानसिक विकास में विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय सम्बन्धी कारकों का निर्माण- जैसे पाठ्यक्रम पाठय साहगामी क्रियाएँ, शिक्षण विधि आदि कारकों को अध्ययन करेगा। विद्यालय में नया वातावरण उपलब्ध होगा। एक विद्वान का कथन है कि शिक्षा मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने की क्षमता प्रदान करता है।

शिक्षा से हमें इस संसार में सुख समृद्धि एवं सुयष प्राप्त होता है और मानसिक स्वास्थ्य किसी भी प्रकार की कठिनाई नही आ सकती तब हमारे पास शिक्षा होगी तो शिक्षा द्वारा प्राप्त प्रकाश से हमारे संषयों को उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है। नीतीशतक ने लिखा है- विद्याहीन मनुष्य पशु के समान है। षिक्षा की हमें मनुष्य बनाती है। शिक्षा से रहित हमारा जीवन व्यर्थ है। विद्यार्थियों की शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य एवं अन्य शक्तियों का विकास किया गया है।

कुंजीशब्द - *प्रस्तावना, विशेषताएँ, उद्देश्य परिकल्पना चर, न्यादर्श, उपकरण, तथ्यों का वर्गीकरण*

----------X----------

प्रस्तावना

मानसिक स्वास्थ्य को विभिन्न आयमों का अध्ययन किया गया है। मानसिक स्वास्थ्य उसके पूर्ण व्यक्तित्व, दृष्टिकोण,

www.ignited.in

रूचियों को प्रभावित करता है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य पर ही बालक की शैक्षिक आँकाक्षाऐं निर्भर करती है। मानसिक स्वास्थ्य का सरल शब्दों में अर्थ उस स्वास्थ्य से है जिसका संबंध मानव व मन से होता है। शारीरिक स्वास्थ्य जहाँ शरीर के स्वास्थ्य से अपना संबंध रखता है। मानसिक स्वास्थ्य सही होगा तो विद्यार्थी को किसी भी क्रिया करते समय परेशान नही है। मानसिक स्वास्थ्य भी मानसिक शक्तियों के अर्थ व विकास तथा मन को स्वस्थ व सुखी बनाने के लिये आवश्यक सभी तरह की देखभाल उपायों एवं रूप में व्यवहार करने की बात कहता है। गुड के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान में किया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान आधुनिक शताब्दी का लोकहितकारी आन्दोलन है इसको प्रारम्भ करने का श्रेय सी.डब्ल्यू बीयर्स को है। उसने 1908 में अपनी पुस्तक को प्रकाशित करके इस आन्दोलन का सूत्रपात चिकित्सालयों में पागलों की दषा में सुधार करने के लिए किया। धीरे-धीरे इसमें मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सभी पहलुओं का समावेश हो गया। विद्यालय के वातावरण के प्रकार समूह व्यवहार (शिक्षकों का व्यवहार) उदासीनता, मनोबल, धनिष्ठता अवरोध की भावना, प्रषासनिक व्यवहार (प्रधानाध्यापक का व्यवहार) विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी का तब सही रहेगा तब उसके माता-पिता का व्यवहार, निर्धनता उच्च आदर्श, घर का अनुशासन व परिवार में किसी भी प्रकार का तनाव नही होना चाहिये।

प्रधानाध्यापक, शिक्षक, सभी सहायक कर्मचारी तथा विद्यार्थियों के मध्य परस्पर संबंध विद्यालय वातावरण का निर्माण करते है। षिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वागीण विकास करना है और इन सबके विकास में विद्यालय वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है। छात्रों में मानसिक विकास चरित्रिक विकास, सामाजिक विकास सावेगिक विकास को उत्पन्न करने व विकास होता है। मानसिक स्वास्थ्य जब मानव के व्यवहार में संतुलन रहता है तो उसे मानसिक स्वस्थ्य कहा जाता है। ऐसा संतुलन प्रत्येक अवस्था में बना रहना चाहिये चितो से रहित विद्यार्थी, पूर्णरूप से समायोजित पूर्ण रूप से आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वासी मानसिक रूप से स्वास्थ्य विद्यार्थी होता है।

विद्यालय में अपनाये जाने वाले सभी स्वास्थ्य षिक्षा संबंधी कार्यक्रमों को बनाते समय, विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक और भावात्मक और उनकी इन अवस्थाओं में कार्य करने की शक्ति का विचार अवश्य रखना चाहिये।

विद्यालय वातावरण की अनिवार्य विशेषताएं:-

1- उपयुक्त स्थान तथा स्वास्थ्य
2- क्षेत्र
3- वायु प्रवेश
4- सुरक्षा और सम्मान
5- दुर्घटनाओं के बचाने के उपाय
6- आवागमन
7- सजावट

विद्यार्थीयों के स्वास्थ्य को सही रखने के लिए स्वच्छ हवा, पानी, बाग-बगीचे पेड-पौधे, पुस्तकाल, भवन, विद्यालय के लिए भूमि, उपकरण, प्रयोगशालाएँ, खेल, मैदान, विभिन्न प्रकार की सुविधा इत्यादि आते है।

विद्यालय परिपेश में मुख्यतः दो परिवेश होते है:-

1. मानवीय संसाधन

2. भौतिक संसाधन

3. मानसिक रूप से पिछडे बालकों की शिक्षा

4. अध्यापक द्वारा विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये

5. इन बालकों के माता-पिता को शिक्षित होना जरूरी है।

6. बालकों के लिये विशेष स्कूल या विद्यालय होना चाहिये।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के विद्यालयी वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के विद्यालयी वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
5. उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

www.ignited.in

6. उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक भेद नही है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर की बालिकाओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक स्तर के बालकों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक अन्तर नही है।
4. माध्यमिक स्तर की बालिकाओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य अन्तर नही है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के मध्य बालकों को विद्यालय वातावरण का सार्थक अन्तर नही है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के मध्य बालिकाओं का विद्यालय वातावरण का सार्थक अन्तर नही है।
7. उच्च माध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के मध्य बालकों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक अन्तर नही है।
8. उच्च माध्यमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के बालिकाओं के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक अन्तर नही है।
9. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के बीच सार्थक अन्तर नही है।
1. 10.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के बीच सार्थक अन्तर नही है।
10. उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के बीच विद्यालय वातावरण का सार्थक अन्तर नही है।
11. उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के बीच विद्यार्थीयों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य का सार्थक अन्तर नही है।

प्रयुक्त चर

चर की परिभाषा- चर एक ऐसा तत्व होता है। जिसका मान एक निश्चित समय अवधि में परिवर्तित हो सकता है। प्रत्येक चर एक निष्चित चिन्ह द्वारा व्यक्त किया जाता है। गुणों का मापन योग्य कोई भी चीज जिसका मान बदले उसे चर कहते है। चर का सरल शब्दों में अर्थ होता है। कोई ऐसी चीज जिसमें किसी एक या अन्य कारणों से बदलाव आता रहता है अर्थात चर कोई भी चीज, जगह, वस्तु आदि का मान बदले उसे चर कहते है।

1. स्वतंत्र चर- विद्यार्थी

2. आश्रित चर- विद्यालय का वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श- न्यादर्श के रूप में अलवर कठूमर क्षेत्र खेडली मे 6 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। यादृच्छित विधि द्धारा उद्देश्य पूर्ण प्रति चयन से विद्यार्थीयों के मानसिक स्वास्थ्य व वातावरण को लेकर माध्यमिक स्तर के 3 विद्यालय व उच्च माध्यमिक के 3 विद्यालय लिये गये है और माध्यमिक स्तर के 300 विद्यार्थी, 150 छात्र व 150 छात्रा, उच्च माध्यमिक स्तर के 300 विद्यार्थी, 150 छात्र व 150 छात्रा यानि 600 विद्यार्थीयों का चयन किया गया। उपकरण स्वनिर्मित है जिसमें 30-30 प्रश्नों की दो प्रश्नावली है जिसमें सत्य व असत्य है सत्य प्रश्न के लिए प्रश्न के लिए 2 अ, असत्य ब 0, अंक निर्धारित किये है। प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष यह निकलता है कि छात्र 40 ही अपने मानसिक स्वास्थ्य व विद्यालय वातावरण पर ध्यान देते है जबकि छात्राऐं अपने मानसिक स्वास्थ्य व विद्यालय वातावरण पर 60 ध्यान रखती है और छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य छात्रों की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया जाता है।

विद्यालय के नामः

1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दांतिया (कठूमर) अलवर
2. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सालवाडी (कठूमर) अलवर
3. श्रीमती गीता देवी उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरली (अलवर)

4. तुलसी विद्या मन्दिर माध्यमिक विद्यालय खेरली (अलवर)
5. अभय विद्या मन्दिर माध्यमिक विद्यालय खेरली (अलवर)
6. जय बजरंग माध्यमिक विद्यालय खेरली (अलवर)

600 विद्यार्थी

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	छात्रा	छात्र
300छात्र (150)	300छात्रा(150)	(150)	(150)

उपकरण

विद्यालय वातावरण इनवेनटरी- डॉ. करूणा शंकर मिश्रा।

मानसिक स्वास्थ्य चैकलिस्ट- प्रमोद कुमार।

प्रयुक्त सांख्यिकी- प्रतिषत सांख्यिकी विवरणात्मक प्रविधि

तथ्यों का वर्गीकरण

सारणी

उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मनक विचन	टी-मूल्य
बालक	97	58-32	6-56	0-23
बालिकाऐं	73	58-03	6-25	

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित है। गणना करने पर टी-मूल्य 0.23 प्राप्त हुआ। यह मूल्य टी तालिका मूल्य के दोनों ही स्तरों से कम है। अतः परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के माध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

सारणी

माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के विद्यालय वातावरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मनक विचन	टी-मूल्य
बालक	97	54-12	5-23	4-43
बालिकाऐं	73	58-78	7-89	

उपरोक्त तालिका माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित है। गणना करने पर टी मूल्य 4.43 प्राप्त हुआ। यह मूल्य टी तालिका मूल्य के दोनों ही स्तरों से अधिक है। अतः परिकल्पना माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालक एवं बालिकाओं के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अस्वीकृत की जाती है, जिसका तात्पर्य है कि माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालक एवं बालिकाओं पर विद्यालय वातावरण का प्रभाव होता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बोहरा, सुनीता उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं शारीरिक षिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।
2. एस.के. प्रारम्भिक स्तर पर शारिरिक एवं स्वास्थ्य आर्य बुक डिपो 30 करोल बाग प्रथम संस्करण 1999।
3. रंगनाथन स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा बिना पुस्तक मन्दिर आगरा-2 (2007)।
4. कल्पलता 'षिक्षा मनोविज्ञान' (भारतीय एवं पाष्चात्य दृष्टि) टाटा एम.सी. ग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लि. नई दिल्ली।
5. योगराज शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा पे्ररणा प्रकाशन रोहिणी दिल्ली (2006)।
6. अस्थाना मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन सेंट जोंस कॉलेज, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर (2013)।
7. तलवार तथा कुमार (2010) प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक आकांक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन।
8. डॉ. अल्का मित्तल(2010) उच्च माध्यमिक स्तर छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन।
9. सतीष कुमार(2011) माध्यमिक स्तर के कक्षा मे हाजिर तथा गैर हाजिर रहने वाले विद्यार्थीयों के मानसिक स्वास्थ्य तथा विद्यालय संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन।
10. मिनी कुमसि (2012) उच्च माध्यमिक स्तर के सुनामी पीडित द्धारा मानसिक स्वास्थ्य स्तर के संदर्भ में अध्ययन।
11. मेण्डल सूक्ष्म शिक्षण का मूल्यांकन और अन्य दी के नव प्रवर्तन में शैक्षिक नवाचार पी. एच.डी. एज्यूकेशन देहली यूनिवर्सिटी (1980)
12. खान खुशनुमार बेगम (2002) ए स्टडी ऑफ

www.ignited.in

इनोवेटिव प्रोनेन्स एण्ड इट्स काॅरलेट्स इन दी सैकण्डरी स्कूल्स पी.एच.डी. एज्यूकेशन महाराजा सायाजीराव यूनि. ऑफ बडोदा।

13. गोस्वामी एन. एस (1983) गुजरात राज्य के माध्यमिक स्कूलों में स्वास्थ्य जागृति के कार्याे का अध्ययन 1983।
14. खीरा वाला जी. जेे. (1995) विद्यालयों के प्रकार तथा कक्षा- कक्ष वातावरण के प्रति स्वस्थ रहना चाहिये और अभिवृति का अध्ययन।
15. मुलिस्तान के रावाला (1965) विद्यालय वातावरण एवं विद्यालय के प्रकार के संबंध में विद्यार्थीयों की अभिवृति का अध्ययन।
16. कुमार रणजीत (2008) छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन। ओ.पी.जे. एस विष्व विद्यालय चुरू।
17. डॉ. श्रीमती प्रेम छावडा, श्रीमती ममता गुप्ता नवाचार युक्त मूल्याकंन एम.एड.पी. एच.डी.शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन 1999।
18. अविनाश सिंह (2002) किशोर विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतोंव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन।

Corresponding Author

Maya Devi*

Research Scholar, Lords University, Alwar (Raj)